कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़से केहेनी।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार।। १ ।।

हुसेन साहब ने जो कुरान का टीका किया है, उसे सबसे श्रेष्ठ कहा गया है। उसके अनुसार कुरान में लिखा है कि कयामत का मुद्दा (आधार) बसरी, मलकी और हकी तीन स्वरूपों के ऊपर है।

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक।
सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित।। २ ।।

यह बसरी, मलकी और हकी तीनों एक ही स्वरूप हैं। तीनों की काम से अलग-अलग महिमा कही है। जब इसके बातूनी भेद खुलें, तो जानकारी मिली।

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल।
ए इलम ले रूह अल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया।। ३ ।।

कुरान लाने के कारण (मुस्तफा बेग सपुत्र श्री अब्दुल्ला पाण्डे) रसूल की उपाधि मिली। कुरान के रहस्यों को खोलने की पदवी इमाम मेंहेंदी का खिताब श्री इन्द्रावतीजी श्री मेहराज ठाकुर के तन को मिला। तारतम ज्ञान की कुंजी लाने से श्यामा महारानी को मलकी स्वरूप कहा है।

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम।। ४ ।।

दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, अर्थात् सम्वत् १६३८ में श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगटे। उनके बाद तीसरे हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी के नाम से जाहिर हुए। कुरान में मलकी स्वरूप को चन्द्रमा कहा और हकी स्वरूप को सूर्य करके कहा है।

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर।
उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी।। ५ ।।

कुरान के इन रहस्यों को आत्मदृष्टि से देखना। जाहिरी नजर का ही तुम्हारे ऊपर परदा है। जिसे मैं समाप्त कर देती हूं। रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के बाद दीन के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज हैं, जिनकी सिफत खुदा के समान कही है, अर्थात् वह खुद खुदा हैं।

बुनियाद रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरुद करे हुसियार।। ६ ।।

दीन की शुरूआत में कुरान लेकर आए, तो रसूल मुहम्मद कहलाए। आखिर में जो उसी के ही छिपे रहस्यों को जाहिर किया तो हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कहलाए। इसी तरह से सभी जगह श्री प्राणनाथजी की ही महिमा है। इस इमाम मेंहेंदी की औलाद या यार को ही मोमिन कहा है। जो अपने पाक-साफ दिल से सिजदा बजाते हैं।

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक।। ७ ।।

एक स्वरूप श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) से दूसरे स्वरूप श्री प्राणनाथजी की महिमा अधिक है। श्री प्राणनाथजी महाराज ने महान स्थान अखण्ड परमधाम के पच्चीस पक्ष की खुशखबरी मोमिनों को दी। यह सारी दुनियां के मालिक हैं और सब पर मेहरबान हैं। उनका स्थान श्री पद्मावतीपुरी धाम श्री गुम्मटजी मन्दिर है। जहां उनकी देहरी पर सब दुनियां आकर सिजदा करेगी।

Nijanand App

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही।। ८ ।।

यह सारी दुनियां के मालिक (बादशाह) हैं और परमधाम चलने का सबसे नजदीक रास्ता बताते हैं जो परमधाम की खासलखास रूह मोमिन हैं उनके मेले में इनकी ही साहेबी है।

उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत।
बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने अखण्ड परमधाम का खजाना कुलजम सरूप की वाणी साथ लाकर जाहिर हुए। इनके एक तरफ ब्रह्मसृष्टि, दूसरी तरफ ईश्वरीसृष्टि की जमात है। इस जमात के अन्दर श्री प्राणनाथजी श्रीजी साहब और बादशाह कहलाते हैं। जैसे शरीर में रीढ़ की हड्डी खम्भा होता है, इसी तरह से यह निजानन्द सम्प्रदाय के खुदाई थंभ हैं। यह खुदाई थंभ के रूप में जाहिर हुए।

जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से दीन की दौलत कुलजम सरूप की वाणी दी, जिससे सभी के यकीन पक्के होते हैं। परमधाम में रंग महल को डिब्बा कहा है और उसके अन्दर मूल-मिलावा में बैठे मोमिनों को कुरान में मोती कहा है। इन मोतियों में श्री प्राणनाथजी चमकते सितारे हैं।

दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी सूर्य के समान सब धर्मों के ऊपर सच्चाई का दबदबा है और सदा श्री राजजी महाराजजी की श्री प्राणनाथजी के ऊपर छत्र-छाया और पूरी मेहरबानी है। जब इनके स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो सबको सब ग्रन्थों के छिपे रहस्य खुल जाएंगे।

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना।। १२ ।।

सम्वत् १७३५ में हरिद्वार में सभी धर्माचार्यों के बीच आप सबके सिरदार माने गए। अखण्ड परमधाम के ज्ञान के लिए यह शेर के समान हैं। सारी दुनियां के इतने बड़े बादशाह हैं कि कयामत के समय सबको अपने चरणों में लेकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तें देंगे।

इन गुलजारी की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन।। १३ ।।

इस कुलजम सरूप की वाणी की पहचान से दिल और आत्मा दोनों को चैन और करार मिलता है। सारी दुनियां के धर्मग्रन्थों में इनकी कुलजम सरूप की वाणी ही सच्चे ज्ञान की रोशनी दे रही है।

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील।। १४ ।।

चांद के स्वरूप श्यामा महारानी मलकी स्वरूप श्री देवचन्द्रजी, सूर्य स्वरूप हकी सूरत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी तन के अन्दर बैठी हैं। चार महान शक्तियां इनके साथ हैं। एक जबराईल फरिश्ता जो वकील का काम करता है। इसी के साथ अक्षर की बुद्धि असराफील है।

Nijanand App

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत।। १५ ।।

तीसरा रूह अल्लाह का नूरी ज्ञान तारतम है। चौथे श्री राजजी महाराज के हुकम के स्वरूप रसूल साहब अन्दर बैठे हैं, अर्थात् जबराईल, असराफील, रूह अल्लाह और हुकम रसूल मुहम्मद चारों की शक्तियां अन्दर बैठी हैं। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी की दोनों जमातें इनके साथ हैं।

ढूंढेंगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान।। १६ ।।

हर धर्मग्रन्थों में श्री प्राणनाथजी की सिफत कहां की है उसको ढूंढते हैं। यही आखिरी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज की दुनियां के ऊपर सत्ता होगी। जो दुनियां वाले अखण्ड मुक्ति चाहते हैं, उनको इस स्वरूप की पहचान होने पर ही बहिश्तें (अखण्ड मुक्ति) मिलेंगी।

इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत।। १७ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर श्री राजजी महाराज का पूर्ण प्यार है और हिन्दू-मुसलमान दोनों को उनके ग्रन्थों से समझाकर सच्चा रास्ता परमधाम का दिखाते हैं। कयामत में सबका हिसाब कर अखण्ड मुक्ति देने का अधिकार श्री राजजी महाराज ने इनको दिया है। यह दोनों हिन्दू-मुसलमान इनके द्वारा ही अखण्ड मुक्ति (बहिश्तों की कायमी) इनके हस्त कमलों से प्राप्त करेंगे।

सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब।। १८ ।।

सारे संसार को अखण्ड करने की साहेबी इन्होंने बड़ी कुर्बानी देकर विरह के अन्दर गुण, अंग, इन्द्रियों को बड़े कष्ट के साथ वश में करने से प्राप्त की। इनके द्वारा रास, प्रकास, खटरुती और कलस चार किताबों का ज्ञान आया।

जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम।
तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब तमामियत पाई बड़ी।। १९ ।।

इन चारों किताबों के ऊपर श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से तोहफा (उपहार) के रूप में सनंध की किताब की बख्शीश की, जिसके ज्ञान को बड़ी मजबूती के साथ कायम किया (पकड़ रखा) और तब जागनी का काम करने की दृढ़ता मन में ली।

पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत।। २० ।।

कुरान की पहली किताब सनंध मिलने से कुरान के सारे रहस्य खुल गए, जिससे प्रारम्भ से लेकर ब्रह्माण्ड कायम (अखण्ड) करने तक की पूरी जानकारी मिल गई। इससे सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान करने का अधिकार मिल गया, जिससे सारे सुन्दरसाथ को अब बुला रहे हैं।

Nijanand App

लिखना बाकी जिलदका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

किरंतन की बाकी वाणी सनंध के बाद लिखने का काम बाकी है। इसे किरंतन किताब में प्रसंग से प्रसंग मिलाकर किताब लिखी। इतना बड़ा काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन कर सकता है?

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए।। २२ ।।

पहले देवचन्द्रजी के तन में आए। तब श्यामा महारानी कहलाए। उनके सत्तानवे साल बाद (सम्वत् १७३५ में) दूसरे जामा में श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए (१६३८ से १७३५ तक सत्तानवे वर्ष पूरे होते हैं)।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर।। २३ ।।

मेरता में कलमे से इशारत मिली और फिर अनूपशहर जाते समय सनंध उतरी। आठ महीने तक दिल्ली में औरंगजेब को सन्देश देने के लिए मोमिनों ने युद्ध किया।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान।। २४ ।।

यह जो हक जात मोमिन हैं, औरंगजेब को इमाम मेंहेंदी के आने का सन्देश देने में मोमिनों को बड़े कष्ट उठाने पड़े। हुसैन साहब ने आगे तफसीर हुसैनी में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के पास ही कुरान का पूरा ज्ञान है, जिससे सारे छिपे रहस्य आप खुद खोलेंगे।

ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत।। २५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे जामें में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के तन में पांच बड़ी शक्तियां इकट्ठी हुईं। श्री धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, अक्षर की आत्म, जागृत बुद्धि तथा हुकम इकट्ठे हुए आगे कयामत की बातें कहनी हैं, जिसकी हकीकत मैं आगे कहती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३७६ ॥

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए।। १ ।।

कुरान के पहले सिपारे में लिखे बयान को सोलहवें सिपारे की चौपाइयां मिलाकर कहती हूं। उसमें इस तरह से लिखा है। जिसे देखे बिना बात समझ में नहीं आती। इन सिपारों में जिकरिया पैगम्बर का किस्सा लिखा है, जो बातूनी में श्री देवचन्द्रजी के ऊपर घटता है।

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामा महारानी) श्री राजजी से कह रहे हैं, हे धाम धनी! मैं संसार में आकर आपको याद करते-करते सभी उम्मीदें भूल गई थी। फिर भी आपने मेरी विनती को स्वीकार किया और मुझे नजरी बेटा मेहराज ठाकुर दिया।

Nijanand App